सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025-26

कक्षा:-8	विषय: हिंदी कहानी संचय	पाठ:4 (भिखारिन)

प्रश्न १) बुज़ुर्ग महिला प्रतिदिन कहाँ खड़ी होती थी ?

उत्तर - बुज़ुर्ग महिला मंदिर के दरवाज़े पर जाकर खड़ी होती थी।

प्रश्न २) शाम एक जब बुढ़िया घर लौटकर आती तब क्या होता था ?

उत्तर - झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता - कूदता आता और उससे लिपट जाता । महिला भी टटोलकर उसके मस्तक को चूमती थी।

प्रश्न ३) मोहन कौन था?

उत्तर- मोहन कौन है? किसका है? कहाँ से आया इस बात का किसी को परिचय नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था इन्हीं दिनों एक दिन संध्या समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था महिला उसका मुख चूम -चूम कर उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी।

प्रश्न ४) महिला लौटकर अपनी जमा पूँजी कहाँ रखती थी?

उत्तर - महिला ने अपनी जमा पूँजी रखने के लिए झोपड़ी में एक हाँडी गाड़ रखी थी । संध्या समय जो कुछ माँगकर लाती, उसमें डाल देती और उसे किसी वस्तु से ढाँप देती इसलिए कि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े।

प्रश्न ५) भिखारिन ने अपनी जमा पूँजी सेठ के पास क्यों रखवाई ?

उत्तर- भिखारिन के पास काफी रूपये हो गए थे, हाँडी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई उसे चुरा न ले। इसलिए अंधी ने अपनी जमा पूँजी सेठ जी के पास जमा करवाई थी।

प्रश्न ६) सेठ जी ने अपने पुत्र की कैसे पहचान लिया था ?

उत्तर- मोहन की जाँघ पर एक लाल रंग का चिह्न था। उसे देखकर सेठ जी ने अपने पुत्र को पहचान लिया था।

प्रश्न ७) सेठ याचक और अंधी दाता कैसे बन गई ?

उत्तर - भिखारी वह होता है जो आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी के सामने याचक बनना पड़ता है। अपने पुत्र की जान बचाने के लिए सेठ जी को भिखारिन के सामने याचना करनी पड़ी और भिखारिन ने सेठ जी को उनका पुत्र तथा अपनी जमा पूँजी दान कर दी। इस तरह सेठ जी याचक और बुढ़िया दाता बन गई थी।